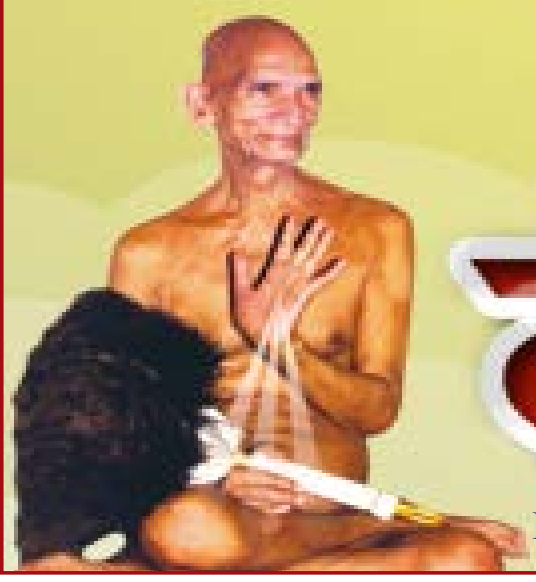

Issue: 148
03 Sept. 2020
www.jainachar.com
Daily

जैनाचार

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

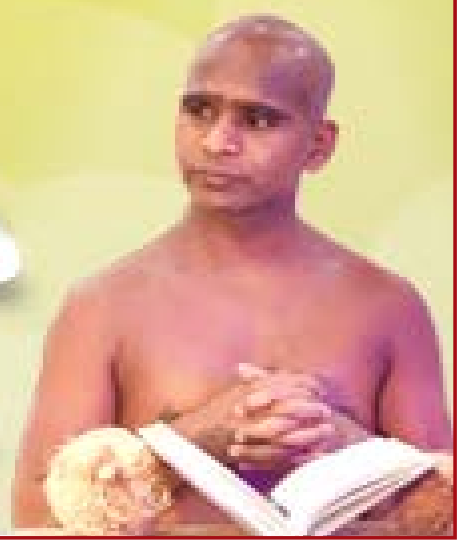

i.; èkjk ijHk.kh e vfr'k;

महाराष्ट्र की धन्य धरा परभणी नगरी, जिसे सौभाग्य प्राप्त है प.पु.तिर्थरक्षा शिरोमणी आचार्य श्री 108 आर्यनन्दी जी मुनि महाराज के पद रज एवम् आशीर्वाद का, जहाँ पर विराजमान है। श्री 1008 चन्द्रप्रभु भगवान की चौतन्य चमत्कारी सातिशय प्रतिमाजी और विशाल श्री 1008 आदिनाथ भगवान, पद्मप्रभु एवम महावीर भगवान की प्रतिमा त्रयी, ऐसे पावन नगरी में एक अतिशय देखा गया।

कर्मयोग से श्री 1008 पारसनाथ भगवान की प्रतिमाजी खण्डित हो गयी थी जिस कारण समाज चिंतित हो गई थी, ऐसे में भारत मे विराजमान कई साधुओं के परामर्श एवम् आशिर्वाद के साथ मन्त्र साधना पूर्वक प्रतिमाजी को घी शक्कर में रखा गया और अनंत चतुर्दशी के मुहूरत पर बाहर निकाला गया। सौभाग्य से १००८ उपसर्गहर पार्श्वनाथ भगवान के पुनश्च अखंड रूप के दर्शन हो गए।

समस्त परभणी समाज अभिभूत एवं उपकृत है ऐसे पावन प्रतिमा के पुनः दर्शन कर। आप भी यथा समय परभणी के विशाल जिनमंदिर के दर्शन अवश्य करे।

विशेष आशीष एवम् मार्गदर्शनः प.पु.ऌध्दतपस्वी आचार्य रत्न श्री 108 विपुल सागरजी महाराज, अध्यात्मयोगी चर्याशिरोमणी आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागरजी महाराज, अतिशययोगी आचार्य श्री 108भद्रबाहुसागरजी महाराज, परभणी गौरव आचार्य श्री 108 सच्चिदानंदीजी महाराज,वैज्ञानिक संत आचार्य श्री 108 निर्भयसागरजी महाराज, वात्सल्यमुर्ती आचार्य श्री 108 पवित्रसागरजी महाराज, प.पु. आचार्य श्री 108 प्रसन्नऋषीजी महाराज, गनीणी आर्यिकारत्न श्री 105 सुयोगमती माताजी, गनीणी आर्यिकारत्न श्री 105 श्रुतमती माताजी, परभणी के श्री 1008 उपसर्गहर पार्श्वनाथ भगवान की जय

संपर्क सूत्ररू पवन अम्बुरे 9823774773, श्री 1008 आदिनाथ चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर, भजन गल्ली, परभणी. (महा.)

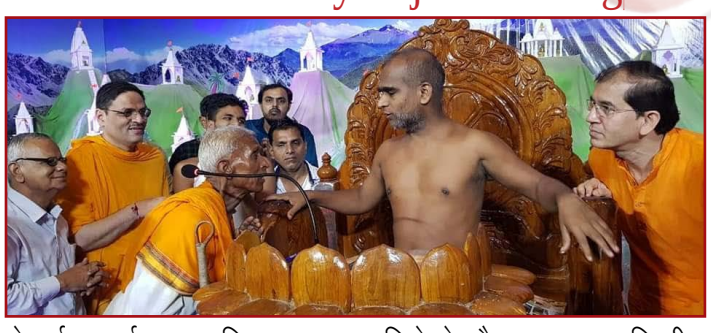

10 miokl èkkjh vkfnoklh cUèk Hk:yky th eh.kk dk vkpk; Jh luhy lkxj th x:jkt d lkfuè; e exy ikj.kk lEiUu gvk

पारसोला निवासी भेरूलाल जी मीणा जिन्होंने आज से 26 वर्ष पूर्व युगश्रेष्ठ आचार्य शिरोमणि तपस्वी सम्राट श्री सन्मति सागर जी की पवित्र साधना से प्रभावित होकर उनकी ही प्रेरणा व आशीर्वाद से पर्युषण पर्व पर 10 निरन्तर उपवास किये थे और पूज्य महाऋषि श्री सन्मति सागर जी भगवन्त के शुभाशीष से तब से लेकर अब तक हर वर्ष पर्युषण पर्व के दसो दिनों में उपवास करते है। प्रायः वे निकटस्थ दिगम्बर गुरुओ के सानिध्यता में अपनी तपोसाधना करते है। विगत कुछ वर्षों से आप पर्युषण पर्व पर आचार्य श्री सुनील सागर जी गुरूराज की निश्रा में जाकर उपवास साधना करते है। इस वर्ष जब प्रतापगढ में आचार्य श्री सुनील सागर जी गुरूराज के पास इस हेतु निवेदन करने पर आचार्य श्री ने कहा कि भेरूलाल जी इस वर्ष महामारी का प्रकोप है, आप वृद्ध हो ऐसे स्थिति में उपवास कैसे हो पाएंगे??

भेरूलाल जी बोले–स्वामी में 25 वर्ष से इस पर्व में लगातार उपवास कर रहा हु। मैं इसे खंडित नही कर सकता। आपके आशीष से निर्विघ्न साधना सम्पन्न हो जाएगी। दृढ़ संकल्पी भेरूलाल जी को शुभाशीष पूर्वक आचार्य श्री ने स्वीकृति प्रदान कर दी। और दसलक्षण के इस महापर्व पर आचार्य श्री संघ में रहते हुए भेरूलाल जी ने कुशलता पूर्वक 10 उपवास की साधना की जिनका आज दिनांक 2 सितम्बर को प्रातः संघ के सन्तो की वात्सल्यमयी व कुशल श्रावको की उपस्थिति में पारणा सम्पन्न हुआ। सँघस्थ मुनि श्री सुयत्न सागर जी जिन्होंने स्वयं 16 उपवास किये उन्होंने आज पहले वात्सल्य पूर्वक भेरूलाल जी को पारणा कराया। ऐसे करुणामयी सन्तो के नायक आचार्य श्री सुनील सागर जी गुरूराज को कोटिशः नमन!! भेरूलाल जी मीणा के तप की बारम्बार अनुमोदना

शब्दसुमन, नमनकर्ता–श्री राष्ट्रीय जैन मित्र मंच भारत

èkel dioy ,d&,d fnu ugh gkrk g] ;g lrr èkkj.k djuk iMrk g

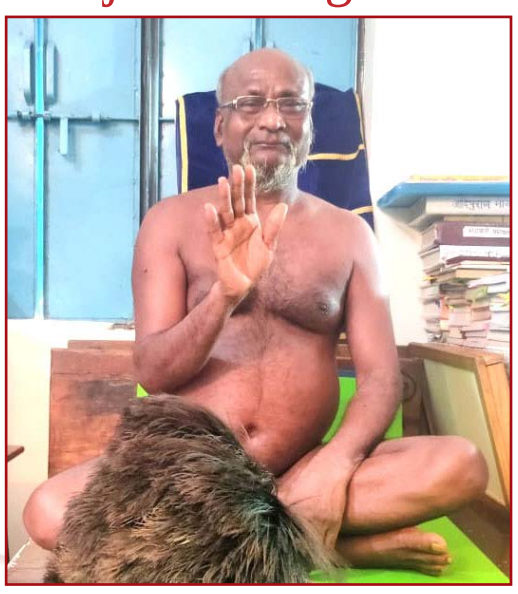

वैज्ञानिक धर्माचार्य कनक नंदी गुरुदेव ने बताया कि 10 धर्म आत्मा को केंद्र में रखकर आत्मा को परिष्कृत शुद्ध करने के लिए है। यह जीव को पतित से पावन जीव से जिनेंद्र बनाता है, इन दस दिनों में धर्म का प्रशिक्षण लिया जाता है। एक एक धर्म केवल एक–एक दिन नहीं होता है यह सतत धारण करना पड़ता है यह आत्मा का स्वभाव है किसी धर्म को या पर्व को हम काल से बांध नहीं सकते क्योंकि यह तो कालातीत है पर्व कभी समाप्त नहीं होता है। यह केवल व्यवहार से समाप्त होता है निश्चय से नहीं, क्षमावाणी पर्व हमारे रग रग में समाहित होना चाहिए। हमारे सभी जीवो के प्रति क्षमा का भाव होना चाहिए, सभी जीवो से मैत्री करुणा प्रेम दया सोहाद्रसभी जीवो की रक्षा उत्थान व प्रगति के भाव होने चाहिए। 10 धर्म हमारे जैन दर्शन के 10 प्राण हैं यह 10 धर्म हमें हमेशा आत्मसात करने चाहिए परंतु हम 10 लक्षण पर्व में ही इनका आंशिक पालन करते हैं। 10 लक्षण पर्व में हम 10 धर्मों के माध्यम से आत्मा के निकट पहुंच सकते हैं, 10 लक्षण धर्म हमारी कषाओ को कम करने के लिए हम मनाते हैं।

आत्मा के आसपास निवास करना ही 10 लक्षण धर्म का उद्देश्य होना चाहिए धर्म हमें जोड़ना सिखाता है। तोड़ना नहीं साधर्मियो के प्रति प्रेम वात्सल्य होना चाहिए हमें हमारे धर्म के मुख्य सिद्धांत स्यादवाद व अनेकांत को हमेशा याद रखना चाहिए। एक मत एक पंथवाद में पढ़ना जैनों का सिद्धांत नहीं है जैन धर्म केवल हमारा नहीं अपितु संपूर्ण विश्व का धर्म है। जैन सिद्धांत सत्य वशाश्वत है, अतः इसका प्रतिपादन संपूर्ण विश्व करेगा इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है धर्म प्रतिदिन करने की वस्तु है। अंतरंग के विचार अच्छे होने चाहिए पवित्र विचार निर्मल विचार व्यक्ति को धर्म धारण करवा कर महान बनाते हैं। यह 10 धर्म प्राणी मात्र का हित करने वाला है यह पर्व हमारे अंतरंग में पाई जाने वाली कलूषता को धोने के लिए आता है। यह सबसे बड़ा पर्व है क्योंकि यह 10 दिन तक रहता है हमारे जीवन में धर्म रहने पर हमारी पात्रता बढ़ जाती है।

पुण्योदय अतिशय क्षेत्र शिरसाड, मुंबई में पर्युषण पर्व के उपवास का आराधना एवं पारणा

गणिनी आर्यिका सौहार्दमति माताजी कि शिष्या श्रुल्लिका श्री कुन्थुमति माताजी का पारणा भव्य रूप से आयोजन किया गया। पारणा में उपस्थित ट्रस्टी मीना जैन, कुसुम किशोर जैन, डॉ. पुनम अेन. शाह भायंदर, शील्पा देवी, रीमा देवी, कलवा से श्री मनोरमाबेन शाह, ब्र. वसन्ती दीदी, १० उपवास की आराधना के पारणा करवाते हुए, श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के महामंत्री बिपीन महेता, श्री मनोरमाबेन शाह, प्रांजल बेन, माताजी एवं वसन्तीदीदी के आराधना की अनुमोदना की। ४८ दिवस के भक्तामर विधान का मीना राकेश जैन, प्रांजल जैन परिवार ने लाभ लिया है।

१६ उपवास के तपस्वी की सुख साता पूछते हुए खुब खुब अनुमोदना

आयुषी प्रतिक गांधी, बोरीवली, मुंबई

Happy Birthday!!!

निधी पियुष जैन

घाटोल-राजस्थान

तमन्नाओं से भरी हो जिन्दगी आपकी,
ख्वाहिशों से भरा हर पल,
दामन भी छोटा लगे इतनी खुशियाँ दे आपको ,
ये नया आने वाला कल!!!

जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामना